ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

उत्तर बिहार में कृषि पर आधारित चीनी उद्योगः एक भौगोलिक अध्ययन

Agro-Based Sugar Industry in North Bihar: A Geographical Study

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

नेहा भारती
शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
मगध विश्वविद्यालय,
बोधगया, बिहार, भारत

सारांश

उत्तरी बिहार भारत वर्ष का सर्वाधिक उपजाऊ मैदान है जहाँ अनेक फसलें का उत्पादन किया जाता है,। यह कृषि प्रधान क्षेत्र है किसानों की खुशहाली कृषि उत्पाद पर निर्भर करता है। किसानें को अधिक सम्पन्न बनाने के लिए कृषि आधरित उद्योगों के विकास भी आवश्यक है। इसी संदर्भ में बिहार का मुख्य गन्ना उत्पादक क्षेत्र उत्तरी बिहार में विभिन्न स्थानों में चीनी उद्योग का स्थापना किया गया है। इन चीनी मिलों में लगभग दशकों तक अबाध गति से उत्पादन होते रहा है। परन्तु हाल के वर्षो में चीनी मिलों के व्यवस्थापकों द्वारा किसानों के इख आपूर्ति के बाद भुगतान नहीं किया गया। फलस्वरूप किसान चीनी मिलों को गन्ना आपूर्ति करने में सक्षम नहीं हो सके। बहुत चीनी मिल बंद हो गये । कुछ ही चीनी मिल पश्चिमी चम्पारण, पूर्वी चम्पारण एवं अन्य जिलों में वर्तमान समय में कार्यरत हैं। ये भी अनेक समस्याओं से जुझ रहे हैं। वर्तमान अध्ययन में इन्हीं चीनी मिलों की स्थिति, समस्या एवं समाधन का अध्ययन किया गया है।

North Bihar is India's most fertile plain where several types of crops are cultivated.It is an agriculture dominant region where farmers happiness depends on agricultural production. To make farmers more prosperous, development of agriculture based industry is very important. In this context, Bihar is one of the primary sugarcane producing area. Several Sugar mills have been established in North Bihar. For decades, the production in these sugar mills has been continued. But recently, farmers were not paid by mill owners for their sugarcane supply. As a result, farmers were not able to supply sugarcane to these mills. Several sugar mills closed down. Very few sugar mills in West Champaran, East Champaran and some other districts are functional today. These are also passing through several other problems. Analysis of these sugar mills, their current situation, problems and solution have been discussed in this paper.

मुख्य शब्द : उत्पादन, चीनी उपभोग, आपूर्ति समस्या, समाधन, संक्षम।
Production, Sugar Consumption, Supply Problem, Solution, Efficiency.

प्रस्तावना

खाद्यान्न पदार्थो में चीनी महत्वपूर्ण खास पदार्थ है। प्रत्येक घर में कोई भी समारोह या अतिथि सत्कार बिना चीनी का असंभव है। चाय कॉफी मिष्ठान इत्यादि में चीनी का ही उपयोग होता है। उत्तर बिहार के जलोढ़ उपजाऊ मैदान में ईख का उत्पादन होता है जिसका उपयोग चीनी मिलों में किया जाता है। उत्तरी भारत में बिहार का दूसरा स्थान है परन्तु हाल के वर्षो में चीनी उद्योग का विकास में कमी हुआ है। वर्तमान समय में उत्तर बिहार के मुख्य चीनी मिल बगहा, हरिनगर, नरकटियागंज, मंझौलिया, सासामुसा, गोपालगंज, सिंदवालिया, रीगा, हसनपुर, लौरिया, सुगौली हैं। यहाँ कच्चा माल सस्ते मजदूर, आवागमन के साधन, शक्ति के साधन एंव बाजार आवश्यक कारक उपलब्ध हैं। इस प्रकार उत्तरी बिहार में चीनी मिलों का विकास की अपार सम्भावनाएँ है।

चीनी मिल में कच्चे माल का अभाव मजदूरों की हड़ताल एवं अन्य व्यावधान के कारण चीनी मिल घाटे में चल रहा है तथा उत्पादन में कमी हुआ है और निरंतर ह्रास हो रहा है। अतः इसके सामने उपस्थापित समस्याओं के

समाधन के लिए बिहार सरकार को संज्ञान लेकर विकास की गति प्रदान करने की आवश्यकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध प्रबंध का उद्देश्य उत्तर बिहार में चीनी मिलों के दयनीय दशा एवं समस्याओं का अध्ययन करना है, शोध पत्र का उदेश्य निम्नलिखित हैः–

1. चीनी मिलों की समस्या को जानना, समझना।
2. इन समस्याओं को निदान हेतु उपाय सुझाना
3. विशेषज्ञों की राय सरकार तक पहुँचाना।
4. चीनी मिलों के संरक्षण प्रदान करने के लिए सरकार का ध्यान आकर्षित करना।
5. चीनी मिलों का आधुनीकिकरण करने के लिए सुझाव

विधितंत्र

प्रस्तुत शोध प्रबंध प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों पर आधरित है। प्राथमिक आंकड़ों, अन्तर्वीक्षा, प्रश्नावली एवं अनुसुचियाँ द्वारा एकत्रित किये गये हैं। प्रस्तुत शोध में बिहार के चीनीं मीलों की समस्याओं एवं उसके निदान को प्राथमिकता दी गयी है। द्वितीयक आँकड़े की प्राप्ति पुस्तक, अभिलेख, कृषि एवं उद्योग कार्यालय से प्राप्त आंकड़े से लिया गया है। इनके अलवा बिहार सरकार का आर्थिक सर्वेक्षण का भी उपयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र की स्थिति एवं विस्तार

अध्ययन क्षेत्रा उत्तरी बिहार का मैदान गंगा नदी से उत्तर $25^0 13' 05''$ उत्तरी अक्षांश से उत्तरी अक्षांश तथा $83^0 50' 10'$ पूर्वी देशांतर से लेकर $88^0 17' 40''$ पूर्वी दशान्तर के मध्य स्थित है। इसके उत्तर में नेपाल, दक्षिण में गंगा नदी, पूरब में पश्चिम बंगाल और पश्चिम में उत्तर प्रदेश सीमा का कार्य करता है। इस मैदान का क्षेत्रफल 56925 वर्ग कि0 मी0 है जो संपूर्ण बिहार का 56.2% भाग है। यहाँ की कुल जनसंख्या 65398660 (2011) है जो बिहार की कुल आबादी का 63% है।

यह मैदान लगभग समतल और आयतकार है। यह बंगाल की खाड़ी से गंगा हुगली नदी मार्ग से जुड़ा हुआ है। समुद्र तल से लगभग 2500 फीट ऊँचा है।

उद्योग का प्रादुर्भाव एवं विकास

बिहार में यह उद्योग प्राचीन समय से कार्यरत है। पहले यहाँ कुटीर उद्योग (खाडसारी) के रूप में चलता था परन्तु आधुनिक ढंग से चीनी बनाने का प्रयास 20 वीं शताब्दी की देन हें यद्यपि इससे पूर्व 1841–42 तथा 1899 ई0 में डच तथा अंग्रेजों द्वारा आधुनिक ढंग से चीनी बनाने का प्रयास किया गया लेकिन विधिवत विकास 1903 से प्रारम्भ हुआ जो बिहार के बेतिया जिला में प्रथम चीनी मिल की स्थापना हुई। और यह उद्योग अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों के कारण विकास करता रहा। 1904 से 1940 के बीच में राज्य में कुल 33% चीनी मिलें स्थापित हुई थी। एक समय था जब देश की चीनी उत्पादन का 40% बिहार में होता था किन्तु अब 1–2% पर पहुँच गया है।

वर्तमान समय में भारत में चीनी मिलों की संख्या 516 तथा उत्पादन 26357 हजार टन (2008–09) में बिहार का स्थान सातवां है तथा कुल चीनी उत्पादन का 1.77% ही रह गया है।

उत्तर बिहार में चीनी की 28 चीनी मिल है जिसमें 11 अभी चल रहा है। सभी निजी प्रबंधन के हाथ चलाया जा रहा है। उत्तर बिहार में मोतिहारी, बेतिया, सिवान, सारण, गोपालगंज, दरभंगा, समस्तीपुर, मधुबनी तथा वैशाली में मिले हैं। उत्तर बिहार के उत्तरी पश्चिमी भाग के उपजाऊ मिट्टी में चुने का अंश अधिक हे जो गन्ना की खेती के लिए अनुकूल है। यहाँ वर्षा तथा तापमान भी अनुकूल है तथा गंडक परियोजना से सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है। सघन आबादी के कारण सस्ते श्रमिक उपलब्ध है। परिवहन की सुविधा होने के कारण गन्ना को चीनी मीलों तक पहुँचने में सुविधा होती है। संझोलिया, सासाराम, गोपालगंज, सिंधवालिया, रीगा, हसनपुर, मोतीपुर, लौरिया, सुगौली, महाराजगंज, सकरी हसनपुर आदि स्थानें पर स्थापित है। इसमें से 11 चीनी मिलें चल रहे हैं।

चीनी के उत्पादन निम्न रूप में किया जा रहा हैः–

1. आधुनिक चीनी बनाने वाली मिलें जो मशीनों से गन्ना पेर कर दानेदार चीनी बनाती है।
2. आधुनिक फैक्ट्रियाँ जो गुड़ से चीनी बनाती है।

उत्तर बिहार में चालू मिलों का उत्पादन (2013–14)

क्र.सं.	चीनी मिल का नाम	स्थापना वर्ष	जिले में मिल का स्थान	पेराई की गयी ईख की मात्राा लाख टन में	चीनी का कुल उत्पादन लाख टन में	रिकवरी का प्रतिशत
1	बगहा	1936	प0 चम्पारण	55.46	5.35	9.86
2	हरिनगर	1938	प0 चम्पारण	79.53	7.64	9.92
3	नरकटियागंज	1934	प0 चम्पारण	57.20	5.71	9.99
4	मंझौलिया	1933	प0 चम्पारण	34.33	3.14	9.78
5	सासामुसा	1932	गोपालगंज	11.51	1.04	9.33
6	गोपालंगज	1931	गोपालगंज	30.03	2.89	9.63
7	सिंधवालिया	1931	गोपालगंज	39.51	3.65	9.30
8	रीगा	1933	सीतामढ़ी	23.05	2.09	9.52
9	हसनपुर	1934	सीतामढ़ी	22.07	2.22	10.05
10	लौरिया	1933	प0 चम्पारण	22.16	2.05	9.46
11	सुगौली	1935	पूर्वी चम्पारण	17.67	1.50	8.90
	योग			392.54	37.28	9.50

स्रोतः– वार्षिक प्रतिवेदन 2015–16

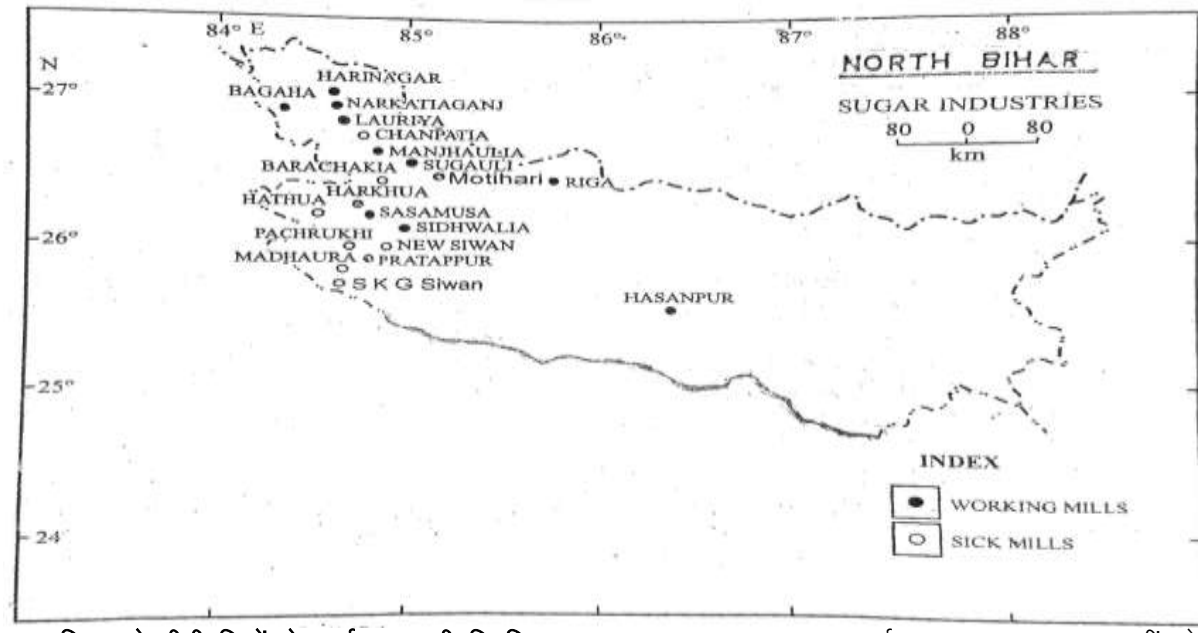

उत्तर बिहार के चीनी मिलों के कार्यकलाप की स्थिति

पराई वर्ष 2015–16 में कुल चीनी मिलों में दिनांक मध्य फरवरी 2016 तक 392.54 लाख क्विंटल गन्ने की पेराई हुई औसतन 72 दिन मिल चली एवं 9.5% रिकभरी लेकर 37.26 लाख क्विंटल चीनी का उत्पादन हुआ।

गन्ना उत्तर बिहार का महत्वपूर्ण नगदी एवं वाणिज्यि फसल है। कृषि पर आधरित उद्योगों में गन्ना आधरित चीनी उद्योग एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस उद्योग चलने से आर्थिक संपन्नता बढ़ती है तथा रोजगार तथा गरीबी दूर होने के साथ मजदूरों को काम मिलने से पलायन रूकता है। लेकिन 1990 के बाद इस उद्योग में गिरावट दर्ज की गई है।

उत्तरी बिहार में चीनी उद्योग की समस्या

1. पुरानी और अनार्थिक कारखाने

उत्तर बिहार में पूरानी मशीने है जो क्षमता से कम पेराई करते हैं। यहाँ कुप्रबंध एवं हड़ताल और कच्चामाल की कमी रहती है।

2. प्रति हेक्टेयर कम उत्पादन

बिहार में उन्नत बीज के अभाव के कारण प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम होने से किसानों को शुद्र मुनाफा बहुत कम होता है।

3. कारखाने सीमित दिन चलना

बिहार में 3 से 4 महीने ही पेराई होती है। जबकि दूसरे राज्य महाराष्ट्र आदि में पांच छः माह चलती है। यहाँ के मजदूरों को 8–9 माह के लिए दूसरे जगह काम ढूढना पड़ता है।

4. जल जमाव की समस्या

गन्ना वार्षिक फसल है उत्तर बिहार के 10–15 % भाग तीन चार माह तक पानी डुब जाता है जिससे गन्ना की फसल पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

5. ईख मूल्य का भुगतान

समय पर ईख का मुल्य भुगतान नहीं होने से किसान इस पफसल को लगाने से बचते हैं।

6. तकनीकी जानकारी की कमी

यहाँ किसानों को नई तकनीक के जानकारी के अभाव में गन्ना का उपज कम होता है।

अन्य समस्याओं में

सरकारी नीति जो बदलती रहती है, अस्थिरता का वातावरण बना रहता है। बिजली की कमी, पूर्जो की कमी, यातायात व्यवस्था की कमी आदि।

समस्या का समाधान

1. पुरानी मशीनों को बदल कर नई मशीनों तथा नई तकनीकी वाली मशीने लगाना और नई कारखाने के साथ इससे निकलने वाले अवशिष्ट का उपयोग करने के लिए पेपर उद्योग, इथनोल, डिस्टलियरियों वाले कारखाना लगाने के अतिरिक्त पेराई का सीजन समाप्त होने के बावजूद मिलों में तेल पेराई, दाल छटाई आदि का कार्य करना होगा, ताकि मजदूरों को 12 माह काम मिले।
2. प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़ाने के लिए नई प्रभेद वाली बिज किसानों को देना होगा।
3. जल जमाव वाले क्षेत्रों के लिए ऐसे प्रभेद उन्नत बीजों का आविष्कार करना होगा जो अधिक पानी सह सके ताकि किसानेां का कम नुकसान हो।
4. ईख मुल्य का भुगतान समय पर होने से और उचित मूल्य मिलने से किसान गन्ना के फसल उगाने के लिए आगे आयेंगे।
6. तकनीकी जानकारी और उचित सलाह के लिए प्रशिक्षण केन्द्र खेलना होगा।
7. प्रबंधकों के द्वारा मिल में सही प्रबंधन होना चाहिए मजदूरों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार के साथ उचित मजदूरी मिलने पर मील में हड़ताल नहीं होगा और मजदूर प्रबंधन दोनों को पफायदा होगा।

उपरोक्त समस्या के समाधान के लिए बिहार सरकार ने अनेक कार्य शुरू किया है जैसे (1) उन्नत बीज के लिए अनुसंधान केन्द्र, से नई प्रभेद के लिए खोज तथा आपूर्ति करने के लिए निर्देश दिया गया है। (2) जल जमाव के समस्या के निदान के लिए जल संसाधन विभाग को उचित कदम उठाने को कहा गया है। (3) सिंचाई के प्रबंध के लिए सिंचाई विभाग को उचित निर्देश दिया है। (4) नई वैज्ञानिक तकनीक के लिए वैज्ञानिक सलाहकार केन्द्र बनाये गये हैं। (5) नई चीनी मिलों को निजी हाथों में देकर किसानों को अनेक सुविधा देने तथा इन चीनी मिलों के साथ दूसरे सह कारखाना चलाने को कहा गया है। (6) किसानें को उचित समय पर भुगतान उचित मुल्य देकर किसानों की समस्या का निदान के लिए कदम उठाये गये हैं।

उपरोक्त समस्या और समाधान के बीच में इस उद्योग को चलाना है अगर बिहार सरकार अपने वादों को कागज से धरती पर उतार दे तो यह उद्योग का कायाकल्प हो जायेगां और आजादी के पहले वाली स्थिति आ जायेगी और उत्तर बिहार के लोग खुशहाल हो जायेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पंडित बाढू (2010) बिहार के भौगोलिक अध्ययन (साहित्य भवन) आगरा पृष्ठ संख्या 113–116*
2. *सिंह आर. पी. एण्ड कुमार अनिल (1970)– मोनोग्राफ ऑफ बिहार, भारती भवन पटना (पृष्ठ संख्या 147–148)*
3. *दुबे आर. एन (1970)– इकोनोमिक ज्योग्राफी ऑफ इंडिया, किताब महल, इलाहाबाद (पृष्ठ संख्या 488–490)*
4. *वार्षिक प्रतिवेदन ईख विभाग (2015–16)*
5. *बिहार स्टेट प्रोफाईल 2013–14*
6. *राम एल. एन. (1991) ए सिस्टमेटिक ज्योग्राफी ऑफ बिहार, पटना युनिवर्सिटी, पटना*
7. *हुसैन एम. (1919) ''एग्रीकल्चर ज्योग्राफी'' रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली*